संवाद

प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए आगामी परिदृश्य में शिक्षकों, छात्रों और प्रधानाध्यापकों की भूमिका को बदलना होगा। उन्हें पेडागॉजिकल लीडर के रूप में तैयार होना होगा जो स्कूलों में प्रभावी ढंग से शिक्षण-अधिगम का समर्थन कर सकें और सुधार ला सकें। स्कूल, समुदाय, समाज और राष्ट्र के विकास के लिए विद्यार्थियों में लीडरशिप के कौशल को विकसित करना बहुत ज़रूरी है ताकि वे हमारे देश के अच्छे नागरिक बन सकें। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में इस बात को स्वीकार किया गया है कि भारत की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में पेडागॉजिकल लीडरशिप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक प्रमुख घटक बन सकती है। पत्रिका में शामिल पहला लेख, 'गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा और पेडागॉजिकल लीडरशिप', शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर पेडागॉजिकल लीडरशिप की भूमिका का विश्लेषण करता है और शिक्षकों को पेडागॉजिकल लीडर बनने की प्रेरणा देता है। पत्रिका में शामिल एक अन्य लेख 'अनुभव आधारित अधिगम के संदर्भ में विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का समीक्षात्मक अध्ययन' शोध में पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थी करके सीखने या प्रयोगात्मक तरीके से सीखने को ही अनुभव आधारित अधिगम समझते हैं और अनुभव आधारित अधिगम को अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम मानते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को और विद्यालयों को अनुभव आधारित शिक्षा पर बल देना चाहिए। साथ ही संदर्भजन्य घटनाओं और पदार्थों के साथ विद्यार्थियों की सघन और प्रत्यक्ष अंतःक्रिया उनके चिंतन को प्रभावित करती है। 'विद्यार्थियों के भोजन विषयक विचार', नगरीय और ग्रामीण विद्यार्थियों के भोजन विषयक विचारों की पड़ताल करता है और इस बात की पुष्टि करता है कि पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते समय विद्यार्थियों के रोजमर्रा के अनुभवों और दैनंदिन ज्ञान को शामिल किया जाना चाहिए, इससे वे जल्दी और ठोस सीखते हैं।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में हैप्पीनेस करीकुलम चलाया जा रहा है। यह कार्यक्रम बच्चों को भावनात्मक रूप से मज़बूत बनाने के लिए दिल्ली सरकार द्वारा चलाया गया है। पत्रिका में शामिल 'प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम संवर्धन हेतु शिक्षण सहायक सामग्री की भूमिका' नामक लेख में हैप्पीनेस कक्षा के संदर्भ में सहायक सामग्री की उपयोगिता बताई गयी है, इससे स्थायी अधिगम में सहायता मिलती है। स्कूल स्तर पर विभिन्न कारणों से लड़कियों की शिक्षा बहुत प्रभावित होती है। 'बालिकाओं की स्कूली शिक्षा का स्थितिपरक विश्लेषण— संघर्ष और चुनौतियाँ', यह लेख लड़कियों की शिक्षा को

© NCERT not to be republished

प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करने का प्रयास कर निवारण के बारे में सलाह देता है। डिजिटल शिक्षा मूल रूप से बेहद उपयोगी है, यह खासकर कोविड-19 जैसी एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं से संघर्षरत समय में शिक्षा की गुणवत्ता एवं शिक्षा की प्रक्रिया दोनों को जीवंत रखने में सहायक सिद्ध हुई है। 'डिजिटल शिक्षा— शिक्षा का एक समावेशी दृष्टिकोण', लेख में डिजिटल शिक्षा के मूल समावेशी दृष्टिकोण आधारित विभिन्न पहलुओं पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। 'मातृभाषा और शिक्षा— तर्क एवं चुनौतियाँ' इस लेख के माध्यम से मातृभाषा के महत्व को रेखांकित किया गया है और अभिभावकों की मातृभाषा के संदर्भ में उपजी भ्रांतियों को दूर करने की दिशा में उठाए गए प्रयास पर रोशनी डाली गई है। राजस्थान में शिक्षण विधा को बाल केंद्रित एवं गतिविधि आधारित बनाने के उद्देश्य से एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग (ABL) किट विकसित की गई है, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाते हुए बच्चों को बुनियादी दक्षता हासिल करने में मदद हो रही है। 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की संप्राप्ति में गतिविधि आधारित अधिगम की उपादेयता' नामक लेख में किट के बारे में विस्तार से बताया गया है। यह किट बुनियादी साक्षरता तथा संख्याज्ञान की समझ को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सक्षम है। 'पूर्व-बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के चयन हेतु अभिभावकों की आकांक्षाएँ', लेख में बताया गया है कि आज के कुछ अभिभावक सरकारी विद्यालयों की अनदेखी करके निजी विद्यालयों द्वारा दी जा रही पूर्व-बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के प्रति आकर्षित हैं, कारण बहुत से हो सकते हैं पर सरकार को ध्यान देना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है?

पत्रिका में 'विशेष' के अंतर्गत 'निष्ठा प्रशिक्षण पैकेज' में से 'भाषा शिक्षणशास्त्र' को लिया गया है, ताकि आप इसे पढ़कर बच्चों में भाषा विकास का प्रयास करें।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। आपके यदि कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य भेजें।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक

© NCERT not to be republished